शून्य लागत प्राकृतिक खेती कार्यक्रम के मुख्य अतिथि हिमाचल प्रदेश के महामहिम राज्यपाल एवं कृषि विश्वविद्यालय के कुलाधिपति आचार्य देवव्रत जी, कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे हिमाचल प्रदेश के तेजस्वी एवं युवा माननीय मुख्यमन्त्री श्री जय राम ठाकुर जी, कृषि मन्त्री डा0 राम लाल मार्कंडा जी, हिमाचल प्रदेश मन्त्री मण्डल के माननीय मन्त्री सर्व श्री किशन कपूर जी, श्रीमती सरवीण चौधरी जी, विपिन परमार जी, बिक्रम सिंह ठाकुर, अतिरिक्त मुख्य सचिव (कृषि एवं वित्त) हिमाचल प्रदेश सरकार डा0 श्रीकान्त वाल्दी जी, विधानसभा के माननीय सदस्य सर्व श्री रविन्द्र धीमान जी, मुल्ख राज प्रेमी जी, बिक्रम जरियाल जी, आशीष बुटेल जी, भूतवूर्व मन्त्री श्री रमेश ध्वाला जी, नेत्री इन्दू गोस्वामी जी, प्रदेश सरकार के विभिन्न विभागों के अधिकारीगण, विश्वविद्यालय के शिक्षक, गैर–शिक्षक एवं विद्यार्थी, पत्रकार बन्धु, भाइयो और वहनों।

मैं विश्वविद्यालय के शिक्षक, गैर–शिक्षक कर्मचारियों, विद्यार्थियों एवं अपनी तरफ से महामहिम राज्यपाल जी, माननीय मुख्यमन्त्री जी, कृषि मन्त्री जी अन्य मन्त्रीगण, विधायकगण, अधिकारी वर्ग व सभागार में उपस्थित सभी सदस्यों का स्वागत करता हूं अभिनन्दन करता हूं।

विश्वविद्यालय के लिए आज का दिन स्वर्णिम एवं ऐतिहासिक है। जब महामहिम राज्यपाल महोदय, माननीय मुख्यमन्त्री जी, कृषि मन्त्री जी और प्रदेश के अनेक माननीय मन्त्रीगण एक साथ इस विश्वविद्यालय में उपस्थित हैं।

महामहिम राज्यपाल जी ने इस विश्वविद्यालय के विकास के लिए हमेशा मार्गदर्शन दिया है और विश्वविद्यालय के विभिन्न कार्यक्रमों में समय–समय पर खुद भाग लेकर अपना आशीर्वाद बनाए रखा है। हाल ही में महामहिम ने 9 जनवरी को विश्वविद्यालय पधारकर विभिन्न गतिविधियों का अवलोकन किया था। हिमाचल प्रदेश की कृषि की दशा और दिशा सुधारने के लिए आपने शून्य लागत प्राकृतिक खेती के रूप में नई सोच के बीज वोए हैं।

महामहिम के दिशा निर्देश के बाद हमने इस नई कृषि पद्धति पर कुछ कार्य पालमपुर व विश्वविद्यालय के कांगड़ा व कुल्लु स्थित कृषि विज्ञान

केन्द्रों में प्रारम्भ किया है। इस पर शोध एवं प्रशिक्षण भी शुरू किया गया। आज महामहिम राज्यपाल जी ने शून्य लागत प्राकृतिक खेती केन्द्र का शिलान्यास किया है। ये केन्द्र न केवल प्रदेश बल्कि पूरे देश के लिए शून्य लागत प्राकृतिक खेती का एक आकाशदीप बनेगा। महामहिम आप एक जाने–माने संस्कृत के विद्वान और योग प्रतिपादक भी हैं। आपकी गरिमामयी उपस्थिति से हम सब अपने आपको गौरवान्ति महसूस कर रहे हैं।

विश्वविद्यालय प्रांगण में पहली बार पधारे तेजस्वी एवं युवा माननीय मुख्यमन्त्री जी के समक्ष मैं विश्वविद्यालय का संक्षिप्त प्रतिवेदन प्रस्तुत करना चाहता हूं। महोदय इस विश्वविद्यालय की स्थापना 1 नवम्बर, 1978 को तत्कालीन मुख्यमन्त्री एवं वर्तमान सांसद श्री शान्ता कुमार जी के कर कमलों द्वारा की गई है।

विश्वविद्यालय के तीन मुख्य कार्य क्षेत्र हैंः

प्रथमः कृषि व सम्बधित विषयों में शिक्षा प्रदान करना।
द्वितीयः हिमाचल प्रदेश के ग्रामीण क्षेत्रों के लिए कृषि एवं सम्बधित विषयों में शोध तथा
तृतीयः प्रसार शिक्षा कार्य करने का दायित्व। इन दायित्वों का निर्वहन करने हेतु चार महाविद्यालय, 13 क्षेत्रीय अनुसन्धान केन्द्र व 8 कृषि विज्ञान केन्द्र कार्यरत हैं।

शिक्षा के क्षेत्र में गत वर्ष B.V.Sc. & AH तथा B.Sc.(Agr.) Hons., कृषि की 137 सीटों के लिए 13600 से अधिक अभ्यार्थियों ने आवेदन किया था। जो विश्वविद्यालय के 40 वर्षों के इतिहास में सर्वाधिक हैं। इससे हमारी शिक्षा की गुणवत्ता का पता चलता है।

राष्ट्रीय स्तर पर शिक्षा की गुणवत्ता का अनुमान इससे भी लगाया जा सकता है कि पहली बार (स्थापना से लेकर अब तक) गत वर्ष 193 विद्यार्थियों ने राष्ट्रीय स्तर की विभिन्न प्रतिस्पर्धात्मक परिक्षाओं में सफलता प्राप्त की। अखिल भारतीय कृषि अनुसन्धान की जूनियर रिसर्च फैलोशिप की परीक्षा का परिणाम 92.7 प्रतिशत रहा।

विश्वविद्यालय में अब तक कुल 6593 विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण कर चुके हैं जिनमें से अधिकांश प्रदेश सरकार के कृषि एवं पशुपालन विभागों में सेवाएं प्रदान कर रहे हैं। खाद्यान उत्पादन में आत्म–निर्भर हिमाचल प्रदेश को भारत सरकार के कृषि कर्मण पुरस्कार से तीसरी बार पुरस्कृत करना कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों, कृषि विभाग में कार्यरत विश्वविद्यालय के भूतपूर्व छात्रों तथा प्रदेश के किसानों के कठिन परिश्रम का ही परिणाम है।

महोदय शोध के क्षेत्र में विश्वविद्यालय ने अब तक विभिन्न फसलों की 155 किस्में जारी की हैं। तथा 100 से अधिक कृषि सम्बन्धित तकनीकें विकसित की हैं। गतवर्ष धान, गेहूं, तिलहन, दलहन व सब्जियों की 11 नई उन्नत किस्मों का अनुमोदन किया गया तथा 10 नई तकनीकों को खरीफ व रबी फसलों की सम्पूर्ण सिफारिशों में शामिल किया गया।

शून्य लागत प्राकृतिक खेती की तकनीक को बढ़ावा देने के लिए 27–30 अप्रैल 2016 को राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें महामहिम राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। जैविक विभाग द्वारा गेहूं, बकव्हीट, मसूर और चना की फसलों पर शून्य लागत प्राकृतिक खेती का मुल्यांकन किया गया जिसका परिणाम उत्साहजनक प्राप्त हुआ है। विश्वविद्यालय में स्थापित शून्य लागत प्राकृतिक खेती का केन्द्र गुरूकुल कुरूक्षेत्र की पद्वति पर विभिन्न फसलों पर अनुसन्धान व परीक्षण का कार्य करेगा।

महोदय जैसा कि विदित है कि प्रदेश की 81 प्रतिशत कृषि योग्य भूमि सिंचाई से वंचित है जिसकी वजह से विभिन्न फसलों की औसतन पैदावार तीन गुणा कम है। इसके अतिरिक्त जलवायु परिवर्तन, कृषि योग्य कम होती भूमि, आवारा पशुओं की समस्या कृषि क्षेत्र में अनेक चुनौतियां हैं जिनके लिए विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक हल ढूढंने में हमेशा अग्रसर है।

महोदय आवारा पशुओं की समस्या से निजात दिलाने के लिए आपके द्वारा गठित मन्त्रीमण्डल की उप–समिति और ग्रामीण आर्थिकी को सुदृढ़

करने के लिए कृषि क्षेत्र के विकास को विशेष अधिमान देते हुए जैविक खेती को बढ़ावा देने की आपके द्वारा पूर्ण राजत्व दिवस के अवसर पर घोषणा कृषि से सम्बधित समस्यों का हल ढूढंने में प्ररेणा स्त्रोत है। किसानों की आर्थिकी को दोगुना करने के लिए विश्वविद्यालय ने कृषि आधारित 20 मॉडल विकसित किये हैं जो कृषि एवं पशुपालन विभाग को भी उपलब्ध करवा दिये गये हैं।

महोदय कृषि क्षेत्र के साथ–साथ विश्वविद्यालय से जुड़ी हुई भी चुनौतियां हैं। विशेषतयः प्रतिवर्ष 80–90 कर्मचारियों के सेवानिवृत होने से विशेषज्ञों एवं सहायक कर्मचारियों का अभाव जिसकी वजह से कुछ एक महाविद्यालय की Accreditation/मान्यता रूकी पड़ी है और अन्य की Accreditation/मान्यता खतरे में है।

दूसरी विशेष चुनौती वित्तीय अभाव की है। सरकार से प्राप्त वित्तीय सहायता केवल वेतन और पैंशन में ही खर्च हो जाती है। सेवानिवृत कर्मचारियों की लगभग 44 करोड़ देय राशी का भुगतान शेष है। इसी तरह शोध और प्रसार शिक्षा की परियोजनाओं के लिए भी धन का अभाव ही वर्तमान की कुल 41 करोड़ रूपये की शोध परियोजनाओं में से राज्य सरकार से वित्तिय सहायता प्राप्त केवल 7 करोड़ की है।

महोदय विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक एवं कर्मचारी कृषि क्षेत्र की चुनौतियों का समाधान करने में अति सक्षम हैं अतः विशेषज्ञों की कमी और शोध परियोजनाओं के लिए वित्तिय सहायता का अभाव चिन्ता का विषय है।

धन्यवाद!
जय हिन्द जय हिमाचल
भारत माता की जय।